गुरुकुल महत्वशतकम्

महेन्द्र कुमार शास्त्री

श्रद्धेया आ॰ बहिन प्रज्ञा देवी को सादर भेंट
महेन्द्रकुमार शास्त्री

गुरुकुल महत्त्वशतकम्

[प्राचीन पद्धति के गुरुकुल का महत्त्व
संस्कृत श्लोकों में लिखा गया है।]

रचयिता एवं टीकाकार
श्री महेन्द्रकुमार शास्त्री





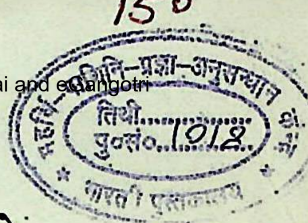
प्रकाशक :
वैदिक-प्रकाशन
आर्यसमाज मन्दिर, बाजार सीताराम
दिल्ली-११०००६

प्रथम संस्करण | वसन्त पंचमी जनवरी १९९० | मूल्य ६ रुपये

प्रकाशक—
राजपाल सिंह शास्त्री
अध्यक्ष, वैदिक-प्रकाशन
आर्यसमाज मन्दिर, बाजार सीताराम
दिल्ली-११०००६
फोन : २६८२३१ : ५१३२०६

प्रथम संस्करण : वसन्त पंचमी
३१ जनवरी १९९०
मूल्य : ६ रुपये

मुद्रक : वशिष्ठ कम्पोजिंग एजेन्सी द्वारा तिलक प्रिंटिंग प्रेस, दिल्ली-६



लेखक की ओर से

किसी और को हो तो हो, मुझे लेशमात्र संदेह नहीं कि आज की दुनिया की सब समस्याओं का समाधान गुरुकुल शिक्षाप्रणाली में निहित है। आज की सब से बड़ी समस्या है विषमता, जिसने सारे संसार में उथल-पुथल मचा रखी है। महायुद्ध की विभीषिका, आणविक हथियारों का अंधाधुंध निर्माण, संगठित हत्याकाण्ड—ये सब इसी विकराल समस्या की विष वृक्ष की शाखा-प्रशाखायें हैं।

यदि बालक बचपन से ही समान व्यवहार वाले वातावरण में पलें तो वे 'यत्र विश्वं भवत्येकनीडम्' की भावना को आचरण में लायेंगे और हमारे संविधान के स्वतंत्रता, समता, बन्धुता के सिद्धांत को क्रियात्मक रूप देंगे।

मैंने इन्हीं भावनाओं से प्रेरित होकर विविध छंदों में "गुरुकुलमहत्त्व शतकम्" की रचना की है।

एक विचारक का कहना है कि सत्य का केवल एक तकाजा है और वह यह कि उसे अभिव्यक्त किया जाये। मैं "वैदिक प्रकाशन" के संचालकों का आभारी हूं कि उन्होंने मुझे अपनी भावनायें आप तक पहुंचाने का अवसर दिया।

—महेन्द्रकुमार शास्त्री

प्रकाशकीयम्

इन पंक्तियों के लेखक को लगभग बारह वर्ष तक गुरुकुल में अध्ययन-अध्यापन का अवसर मिला और मेरा यह विश्वास है कि आज की सभी शिक्षा प्रणालियों में गुरुकुल शिक्षा प्रणाली सर्वश्रेष्ठ है।

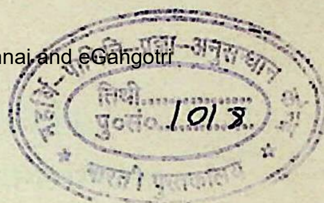
एक दिन जब मैं अपने एक समानधर्मा मित्र और गुरुकुल गौतम नगर, मस्जिद मोठ, सराय रुहेला, दिल्ली के आचार्य पंडित हरिदेव जी से इसी विषय पर चर्चा कर रहा था, तब उन्होंने यह विचार प्रकट किया कि संस्कृत श्लोकों के शतक के रूप में ये विचार जनता तक पहुंचाये जायें। इसके लिए उन्होंने अधिकाधिक सहयोग देने का भी आश्वासन दिया।

शतक तैयार करने के लिए मेरी दृष्टि अपने अभिन्नहृदय मित्र पंडित महेन्द्र कुमार जी शास्त्री पर पड़ी। जब मैंने इस बारे में उनसे अनुरोध किया तो वे सहर्ष इसे मान गये।

मैं अपने इन दोनों मित्रों को अपने सांझे शुभ संकल्प की पूर्ति हेतु दिये गये सहयोग के लिए धन्यवाद देता हूं। वैसे इसकी आवश्यकता न थी, क्योंकि दोनों सज्जन मेरे अत्यन्त आत्मीय हैं।

आशा है कि इस रचना से पाठकों के मन-मस्तिष्क पर गुरुकुल शिक्षा प्रणाली की उपादेयता अंकित होगी।

—राजपाल सिंह शास्त्री



गुरुकुल महत्त्वशतकम्

शिवं नत्वा पूर्वं बहुसुगुणयुक्तां च जननीम्,
धरण्यै मात्रे वै विविधनिधिराष्ट्राय च नमः ।
नमस्ते भूयो नः खलु गुरुजनेभ्यश्च सततम्,
प्रणामो देवेभ्यश्च सुविनयपूर्णो भवतु मे ।१।

भावार्थ—सर्वप्रथम कल्याणकारी प्रभु और गुणों की खान जन्मदात्री मां को नमस्कार करके भूतधात्री जन्मभूमि और धनों के भण्डार देश को मेरा नमन । फिर गुरुजनों को नमस्ते एवं सभी देवताओं को मेरा विनम्र प्रणाम होवे ।१।

इदं काव्यं कृत्वा गुरुकुलजनानां गुणयुतम्,
प्रदत्तं तेभ्यो वै गुरूकुलमहत्त्वं खलु मया ।
सनिष्ठं पाठेनास्य भवतु सुमेधा गुणवती,
महेन्द्रस्येहेच्छा पठतु किल चेदं बुधजनः ।२।

भावार्थ—मैंने गुरुकुलवासियों के गुणयुक्त "गुरुकुल महत्त्व" काव्य की रचना करके कुलवासियों को समर्पित कर दिया । इस सन्दर्भ में 'महेन्द्रकुमार' की केवल यह इच्छा है कि बुधजन इसको अवश्य पढ़े ।२।

वृक्षाणामारामे सुरभिभरिता यत्र धरणी,
सुमंत्राणां घोषैर्बहुमुखरिताभूच्चहुदिशाः ।
ऋषीणामार्य्याणां चरितचरणैःपूतवसुधा,
शुभं भात्येवं वै गुरुगुणगणैर्नः गुरुकुलम् ।३।

भावार्थ—जहां वृक्षों के बाग में पृथ्वी सुगन्ध से भरपूर हैं, मंत्रों के उच्चारण से चारों दिशायें मुखरित हो रही है। श्रेष्ठ ऋषियों के चरित्रों से और चरणों से धरती पवित्र है। गुरुजनों के गुणों से हमारा शुभ गुरुकुल शोभायमान हो रहा है।३।

जलैः कृत्वा स्नानं निखिलकुलवृन्दैः प्रतिदिनम्,
हुतं हुत्वा प्रातः ऋषिमुनिजनैर्भक्तिविहिता ।
नमस्ते देवेभ्यः खलु सविधि नित्यं नु गदिता,
गुरोराशीर्वादैः फलति भुवि तन्नः गुरुकुलम् ।४।

भावार्थ—प्रतिदिन प्रातःकाल ऋषिमुनि कुलवासियों ने स्नान करके तथा हवन करके भक्ति की। फिर विधि-पूर्वक देवताओं को नमस्ते की। अतः वह हमारा गुरुकुल धरती पर गुरुजनों के आशीर्वाद से फलता-फूलता है।४।

सदा प्राणायामैः प्रभुनियतभक्तैर्वटुवरैः,
महायज्ञे निष्ठैर्यमनियमलग्नैस्सुखयुतैः ।
समाधौ लग्नैः वैं विगतभवक्लेशैश्च मुनिभिः,
सदा शुद्धं सिद्धं सफलचरितं नो गुरुकुलम् ।५।

भावार्थ—प्राणायामों से उद्भूत भक्ति से ब्रह्मचारियों, महायाज्ञिक, यम-नियमों के पालन से सुखयुक्त, और सांसारिक दुःखों से रहित मुनिजनों से हमारा गुरुकुल साधनायुक्त तथा पवित्र एवं सफल जीवन वाला है ।५।

महारण्ये रम्ये सुजनयति मेधां गुरुवरः
महाशैले शीलं खलु भवति विप्रस्य सुधिया ।
सरस्वत्यां नद्यां तरितबहुदुःखाद् वटुजनः,
जगत्यामित्थं भाति सकलमिदं नो गुरुकुलम् ।६।

भावार्थ—सुन्दर वन में गुरुमहाराज बुद्धि को प्रबुद्ध करते हैं । बड़े-बड़े पर्वतों पर पण्डित जी की बुद्धि से शिष्टाचार पनपता है । विद्या रूपी सरिता में तरकर शिष्यवर्ग दुःखों से पार हो जाते हैं । इस प्रकार संसार में गुरुकुल शोभा पाता है ।६।

स्वधास्वाहाधारा मनभुवि सुवर्षत्यनुदिनम्,
सरस्वत्यां स्नानं भवति बहुपूतं शुभमनः ।

मनो नूनं ज्ञानैर्बहुविधिविज्ञानैश्च भरितम्,
शिवं चाभात्येवं मनुजगणचित्ते गुरुकुलम् ।७।

भावार्थ—मधुर वाणी और अमृत की मनरूपी वसुधा पर प्रतिदिन वर्षा होती है। ज्ञानापगा में स्नान होने पर शुभ मन पवित्र हो जाता है। सबके मन ज्ञान-विज्ञान से परिपूर्ण हैं। इस प्रकार हमारा शिव संकल्प वाला गुरुकुल मनुष्यों के मन में विराजता है ।७।

इदं स्थानं व्याघ्रैर्बहुलमपि द्वेषादिरहितम्,
नदीनां तीरे वै सह सलिलपानं मृगकुलैः ।
अहो ! रे ! हिंस्रैश्चापि कथमिव चैकत्र रमणम् ।
महत्त्वं साश्चर्यं भवति खलु नूनं गुरुकुलम् ।८।

भावार्थ—यह गुरुकुल का स्थान व्याघ्रादि हिंसक प्राणियों से युक्त है। फिर भी यहां द्वेष नहीं है। सारे ही वन्य जीव नदियों के किनारों पर एक साथ जल पीते हैं। भक्ष्य-भक्षक पशु किस प्रकार एक स्थान पर विचरते हैं ! निश्चय से गुरुकुल का चकित करने वाला महत्त्व है ।८।

परस्परालापेषु ननु मधुमिष्टं मधुवचः,
सुभाग्यं छात्राणां श्रुतिपथगता वै गुरुगिरः ।

विनम्रेभ्य एभ्यो भवति बहुविद्यागुणधनम्,
महानन्द नित्यं च भुवि सततं नो गुरुकुलम् ।९।

भावार्थ—गुरुकुलवासी सभी जन वार्तालाप के समय मीठा बोलते हैं । छात्रों का सौभाग्य है कि उनके कानों में गुरुओं की वाणी सुनाई देती रहती है । विनीत विद्यार्थियों को बहुत विद्यारूप धन उपलब्ध होता है । इस प्रकार गुरुकुल का वातावरण आनन्दयुक्त रहता है ।९।

श्रुतीनां शास्त्राणां सकलविधिभिर्यत्र पठनम्,
गुणानामाधानं मम गुरुकुले सन्निधिगुरोः ।
निसर्गाद्धि पूतं चरितमपि तेषां भवति वै,
वरं भव्यं स्थानं परमसुखदं नो गुरुकुलम् ।१०।

भावार्थ--गुरुकुल के पुनीत वातावरण में सदैव वेद और शास्त्रों का अध्ययन होता है । गुरुजनों के सान्निध्य से विद्यार्थियों के मनो में गुणों का आधान होता है । इसी कारण उनका जीवन स्वभाव से ही पवित्र रहता है । अतः हमारा गुरुकुल सुख देने वाला और बहुत सुख का स्थान है ।१०।

अहो ? वात्सल्यं न स्मरति कुलवासी स्वजननीम्,
सुसौजन्यादित्थं स्मरति न कदापि स्वपितरम् ।

रे ! भोज्यान्नं न्नूतं स्मरति न कदापि स्वभवनम् ।
सदैवानन्दाढ्वै च सफलफलं नो गुरुकुलम् ।११।

भावार्थ—आश्चर्य की बात है कि यहां मिला प्यार कुलवासियों को माता की याद भी भुला देता है। मां की याद नहीं आती । सुजनता के व्यवहार से पिता भी याद नहीं आते। सात्त्विक भोजन घर की याद नहीं आने देता। हमारा गुरुकुल आनन्दयुक्त सफल परिणाम वाला है ।११।

ममाचार्य्याः नित्यं हि निखिलफलैः कल्पतरवः,
वटूनामालोकं जनयति सहर्षं गुरुगणः ।
श्रुतिं सम्यक्छ्रुत्वा जगति ननु छात्राः प्रमुदिताः,
नमस्ते नूनं यत्र सुभवति तन्नो गुरुकुलम् ।१२।

भावार्थ—गुरुकुलों के आचार्य शिष्यों की कामनाओं को पूर्ण करने वाले कल्पतरु हैं । गुरुजन भी छात्रों के मनों में प्रकाश और हर्ष को जन्म देते हैं। उनके मुखारविन्द से वेद ज्ञान का श्रवण कर छात्र प्रमुदित हो उठते हैं । गुरुकुल में नमस्ते के व्यवहार से आदर होता है ।१२।

गृहीतः आचार्य्याच्छ्रुतिपठनधर्मश्च वटुभिः,
स्मृतीनामार्षाणां श्रुतिपथजुषामत्र पठनम् ।
नितान्तं पुण्यानामतिशयतया युक्तसुजनाः,
उपाध्यछायैश्छात्रैर्बहु शिवशुभ नो गुरुकुलम् ।१३।

भावार्थ—आचार्य जी से शिष्यों ने अध्ययन रूप धर्म को ग्रहण किया है। वेदानुकूल स्मृतियों का गुरुकुल में पठन होता है। यहां पर सब ही पुण्यों के अति बाहुल्य से अच्छे मनुष्य रहते हैं। उपाध्याय और छात्रों से गुरुकुल बहुत कल्याण और पवित्रता से भरपूर है।१३।

महाविद्यो विद्वान् सकलगुणवन्द्यो गुरुवर,
महाज्ञानी ध्यानी प्रतिदिनसमाधौ धृतमनाः।
तस्माद्वेद्यं सत्त्वं ऋतमिह तज्ज्ञानमनघम्,
सुभाग्याल्लब्ध्वाहं गुरुकुलमिदं वै शुभपदम्।१४।

भावार्थ—अनेक विद्याओं के ज्ञाता महाविद्वान् गुणों के आधार परम श्रेष्ठ गुरु महोदय ज्ञाननिधि नित्यप्रति समाधिलीन योगी हैं। उनके सौभाग्य से विद्या के परमपद कल्याणप्रद गुरुकुल को प्राप्त करके निष्पाप अपरिवर्तित ज्ञातव्य सत्त्व को जाना जाता है।१४।

नितान्तं छात्राणां सुविदितमना ये हि गुरवः,
विज्ञानार्थं तेषां कुलभुवि यतन्ते प्रतिदिनम्।
सदाचाराच्छात्रा विहितनियमा धर्मविषये,
प्रवर्धन्ते विद्यासुबहुपटवस्ते हि वटवः।१५।

भावार्थ—विद्यार्थियों के मनों से भलीभांति परिचित अध्यापक गण प्रतिदिन छात्रों के विविध ज्ञान की वृद्धि के

लिए कुलपरिधि में निरन्तर प्रयत्न करते हैं। विद्यार्थी भी सदाचार से धर्म में संलग्न विद्याओं में प्रवीण होकर बहुविध आगे बढ़ रहे हैं।१५।

यदा सत्यं ज्ञानं ननु विविधसूरैरधिगतम्,
तदोद्भूता श्रद्धा यम-नियम-निष्ठा बहुविधा।
इहाचार्याणां वै खलु भवति मेधा फलवती,
भ्रमान्मुक्तैश्शिष्यै पठितबहुविद्या सुखकरी।१६।

भावार्थ–गुरुकुल में विद्यार्थियों को जब अनेक विद्वानों से सत्य ज्ञान की उपलब्धि हुई तो उनके मन में यम-नियम में श्रद्धा और निष्ठा आविर्भूत हो गई। आचार्य महानुभावों की बुद्धि सफल हुई है और छात्र सन्देहों से दूर होकर सुखकारी विद्या में संलग्न हो गए।१६।

सुवेदानां पाठैर्जगति गमनं ज्ञानकिरणैः,
सुखान्ता मोक्षाप्तिर्भवति निगमैरागमरुचिः।
तया शक्तिर्भक्ति गुरुचरणपूजा भवति वै,
अथोपाध्यायानामति भवति शिक्षा फलवती।१७।

भावार्थ–सुन्दर वेदों के पढ़ने से, ज्ञान के प्रकाश से लोक व्यवहार आता है। वेदादि शास्त्रों में रुचि होती है और अन्त तक सुख देने वाले मोक्ष की प्राप्ति होती है।

उससे शक्ति, भक्ति और गुरु चरणों की पूजा होती है तथा उपाध्याय जनों की शिक्षा बहुत फलदायिनी रहती है।१७।

श्रमाचारात्तो वै सकल कलया ज्ञातमतयः
ऋतं धर्मं जानन्ति हि गहनज्ञानं च गुरवः।
सदाचारैः पुण्यैश्च सुविमलचेतो वटुजनः,
सुबुद्धास्ते बुद्ध्या निगमविषये ज्ञानवशतः ।१८।

भावार्थ–मेहनत से, व्यवहार से और बहुत कलाओं से प्रबुद्ध बुद्धिवाले गुरु महोदय गूढ़ विषय वाले अपरिवर्त्तित धर्म को जानते हैं। पवित्र आचरणों से शिष्य वर्ग भी पवित्र मन वाले हो जाते हैं। ज्ञान की शक्ति से और बुद्धि से वेद के विषय में बहुत जानकार बन जाते हैं।१८।

विशेषात्प्राज्ञानां निखिलव्रिदुषां यत्र गणना,
ममाचार्य्या पूज्याः विविधविदुषां ते हि पुरतः।
स्वधर्मं भुंजानाश्श्रुतिपथि विज्ञाने ऽतिनिपुणाः,
ममोपाध्यायानां बहुवटुजन पूज्याश्च चरणाः ।१९।

भावार्थ–विशेषतया सम्पूर्ण विद्वानों और बुद्धिमानों की जहाँ गणना होती है। उन अनेक प्रकार के विद्वानों के समक्ष मेरे आचार्य ही पूज्य माने जाते हैं, जो आचार्यवर

अपने धर्म का उपभोग करते हैं। ज्ञान मार्ग के विज्ञान के वेत्ता हैं। अतः शिष्यगण गुरुजनों के चरणों की पूजा करते हैं।१६।

महाविद्यारण्ये ऽधिगतनयविद्यां सुललिताम्,
सुपीत्वा वै ज्ञानामृतसलिलमत्रैव नितराम्।
यदा विद्यातीर्थे कृतमिह सुस्नानं नु वटुभिः,
गुणाकीर्णे ध्यानं निखिलकुलछात्रैर्गुरुजने।२०।

भावार्थ—विद्यार्थियों ने विद्यातीर्थ में स्नान किया। गुरुकुल में ज्ञानामृत का खूब पान करके विद्यावन में ही सुन्दर नीतिशास्त्र का अध्ययन किया तथा इस पवित्र स्थल पर गुणों के भण्डार गुरुजनों में ध्यान एकत्र किया।२०।

पुरा कृत्वा पूजां तु गुरुचरणानां विधियुताम्,
नमस्ते कुर्वन्त्यत्रनतशिरसा वै सुनियतम्।
गुरूणां छात्राणां भवति बहुस्नेहं सुललितम्,
शिक्षा शास्त्राणामेव जनयति श्रद्धां गुरुजने।२१।

भावार्थ—गुरुकुलों में छात्रवृन्द सर्वप्रथम प्रातः गुरुओं के चरण छूकर वन्दना करते हैं। फिर सिर झुकाकर नमस्ते करते हैं। इस व्यवहार से गुरुओं और शिष्यों में बहुत प्रेम उपजता है। यहाँ की शास्त्रों की शिक्षा अध्यापकगण में श्रद्धा को जन्म देती है।२१।

अज्ञाः नूनं बालाः सकलभुवि सिद्धं नु कथनम्,
गुरोर्दत्ता दृष्टिः कथमिव हि बालाः जगति ते ।
सदाधीता विद्या प्रखरमतिदृष्टिः सुमहती,
अतो विज्ञैर्दृष्टं खलु निगम नेत्रैः ज्ञानमनघम् ।२२।

भावार्थ—लोकविदित कथन है कि बालक को अज्ञानी कहा जाता है। परन्तु गुरु से मिले ज्ञान-चक्षुओं से वह फिर किस प्रकार अज्ञानी है ! अध्यापक वृन्द से अधीत विद्या से उसकी तीक्ष्ण बुद्धि की दृष्टि हो जाती है । इसलिए वेद-ज्ञान रूपी नेत्रों से विद्वानजनों ने पवित्र ज्ञान को देखा है ।२२।

रविराचार्य्यो मे निबिडतिमिरं नाशयति यः,
अविद्यान्धेभ्यो यस्सुनिगमचक्षुज्योतिनिचयः ।
मनोज्ञे संसारे भ्रमति ननु वेदागममुनिः,
प्रमोदन्ते शिष्यास्सुगुरुवरज्ञानाद्बहुधियः ।२३।

भावार्थ—मेरे आचार्य्य रूपी सूर्य अज्ञानरूपी अन्धकार का नाश करते हैं । अज्ञान के अन्धों के लिए वह ज्ञान नेत्रों की ज्योति का पुंज है । निश्चय से वेद ज्ञान को प्राप्त करके यह मनस्वी मुनि इस सुन्दर संसार में विचरता है । अनेक छात्र भी गुरु ज्ञान से धारणावती बुद्धि को प्राप्त करके प्रसन्न रहते हैं ।२३।

सुमन्तव्यं मन्त्रं पठति बहुरम्यं मधुगिरा,
रहस्यं शास्त्राणां प्रकटयति गुह्यं महिमया ।
सदादर्शनावै विदधति कविदृष्टिः गरिमया,
गुणानामागारो भवतु ममपूज्यो कुलगुरुः ।२४।

भावार्थ—गुरु महोदय मीठी वाणी से मननशील मन्त्र का बहुत सुन्दर पाठ करते हैं। महिमा से शास्त्रों के गूढ़ रहस्यों को प्रकट करते हैं। गरिमापूर्वक दर्शनों की दिव्य दृष्टि प्रदना करते हैं। गुणों के सागर मेरे कुलगुरु सदा पूज्य होवें ।२४।

नु वेदानां ज्ञात्वा निगमविधिमाचार्य्यदयया,
सु तथ्यं चायातीह खलु बहु तेषां हि पठनात् ।
गुणाधारं ज्ञानं भुवि तिमिरनाशाय रचितम्,
गुरूणामाभारं प्रकटयति कामं वटुजनः ।२५।

भावार्थ—आचार्य की कृपा से वेदों के ज्ञान की विधि को जानकर सत्यता का बोध होता है और वेद के बार-बार अध्ययन से भी होता है। ईश्वर ने गुणों के सागर वेद ज्ञान को धरती से पाप के अन्धकार को दूर करने के लिए प्रकट किया है। अतः ज्ञान पथ-प्रदशक गुरुजनों का शिष्य वर्ग यथेच्छ आभार प्रदर्शित करता है ।२५।

अधीता या विद्या मुखरयति ज्ञानं बहुविधम्,
ददात्यन्तश्शान्तिं तदनु ननु मोक्षाधिगमनम् ।
तदा निर्द्वन्द्वं गच्छति जगति नूनं यतिजनः,
सुखं शेते नित्यं खलु निखिलयोगीमुनिवरः ।२६।

भावार्थ—गुरुजनों से अधीत विद्या अनेकविध विज्ञान को प्रकट करती है । वह विद्या आन्तरिक शांति को प्रदान करती है । पश्चात् मोक्ष की प्राप्ति होती है तथा यति-जन धरती पर बिना रोकटोक विचरता है । मुक्तात्मा फिर प्रभु की शरण में विश्राम लाभ करता है ।२६।

तव स्वप्नं सिद्धं जनयति सुखं नः हृदि सदा,
विलोक्यानन्दं नः प्रहसति च नित्यं मम गुरुः ।
अहोभाग्यं चास्माकमिह सुखिनो वै वटुजनाः,
भवत्याश्चर्य्यं वै कथमिव च साम्यं हि मनसि ।२७।

भावार्थ—गुरुवर्य्यं का स्वप्न सिद्ध हो गया । वह हमारे हृदयों में आल्हाद भर रहा है । हमारे आनन्द को देखकर गुरु भी प्रमुदित है । हमारा सौभाग्य है कि आश्रम में सभी छात्र सुखी हैं । गुरु शिष्य मन से एक ही हैं—यह आश्चर्य ही है ।२७।

सुभद्रं संकल्पं रक्षति ननु नित्यं त्रिभुवनम्,
निषादे विप्रे वै भुवि भवति साम्यं तव मनः ।
कुटीरे कल्याणे तव वसति वैखानसजनः;
तपोभूमौ नूनं भ्रमति किलसर्वं मृगकुलम् ।२८।

भावार्थ—आचार्यश्री आपका कल्याणकारक शुभ संकल्प त्रिभुवन की रक्षा करता है। आपके मन में निषाद और ब्राह्मण समान है। आपके बनाये झोंपड़ों में तपस्वी जन रहते हैं और आपकी तपोभूमि में पशु-पक्षियों के झुण्ड विचरते हैं ।२८।

सुरम्या वाणी ते वितरति हि जिव्हामृतरसम्,
विद्यारायं नित्यं विभजयति निष्काममनसा ।
दयासिंधुः श्रीमान् बहुजनहितेभ्यो धृतवपुः,
विद्यादेवंदेवः रचयति महान्तं च पुरुषम् ।२९।

भावार्थ—मनुष्यों के हित के लिए आपकी मनोहारिणी वाणी जिह्वा के अमृत रस को बांटती है। अमृत के सागर विद्यादेव ! आपने शरीर को विद्यार्थियों के हितार्थ धारण किया है। आप दिव्य महापुरुप को जन्म देते हैं ।२९।

महाशुद्धाः पूताः सुभतिकृतयो वै भुवि गुरोः
तथैवैते छात्राः हि गुरुकुलकल्याणप्रतिमाः ।

मनोज्ञास्सभ्याः वै खलुनिखिलराष्ट्रप्रतिभुवः,
सरस्वत्यां स्नातास्सुनियतभविष्यस्य धुरयः ।३०।

भावार्थ—संसार में गुरु की तस्वीर शुद्ध पवित्र शिष्य ही होते हैं। ये छात्र सचमुच गुरुकुल की कल्याण करने वाली जीवित मूर्तियां है। सुन्दर सभ्य विप्रजन सारे राष्ट्र के जामिन हैं। सरस्वती में स्नान करके ये अच्छे निश्चित भविष्य की धुरी हैं ।३०।

द्विजः पूज्यश्श्रेष्ठः खलु निखिलवेदस्य निधिपा,
विनम्रः पुण्यैस्सूतसकलशुभविद्याप्रतिनिधिः।
प्रसिद्धो मेधावी खलु विमलबुद्धिश्च सफलः,
महाधन्यश्शिष्यो गुरूकुलगणभाव्यो मम गुरोः ।३१।

भावार्थ—चारों वेदों के रक्षक द्विजजन पूज्य और श्रेष्ठ हैं। ऐसा विप्र पुण्यों से जन्म पाता है, जो विनम्र होता है। सम्पूर्ण शुभ विद्याओं का प्रतिनिधि होता है। वह विमल बुद्धि के कारण सफल, मेधावी है। मेरे गुरु का शिष्य गुरुकुलों में शोभा को प्राप्त करता है, जो महा धन्यवाद का पात्र होता है।३१।

महायोद्धा वीरो विपदि बहुधीरो युधिजयी,
शरीरेऽस्मातुल्यः सबलमनबाह्वोः क्षितिधरः।

प्रचण्डस्तेजस्वी सकलजनत्राणेऽतिनिपुणः,
स्वराष्ट्रे राजन्यो भवति ननु शिष्यः कुलगुरोः ।३२।

भावार्थ—महान योद्धा, बहादुर विपत्तियों में धीर, युद्ध को जीतने वाला, पत्थर के सदृश शरीर से दृढ़ बलवान्, मन से और भुजाओं से धरती को धारण करने वाला, प्रचण्ड, तेजस्वी, सब जनों की रक्षा करने में बहुत चतुर, देश में कुलगुरु का क्षत्रिय शिष्य होता है ।३२।

अभावस्यापूर्तिहि विदधति वैश्यः प्रतिदिनम्,
जनानामाधारं जनयति च धान्यं बहुविधम् ।
धनाढ्यो भूत्वा वै सकलजनदुःखं हरति यः,
उपाध्यायस्येहैव भुवि खलु शिष्यो धनपतिः ।३३।

भावार्थ—वैश्य जन नित्य प्रति अभावों की पूर्ति करता है । मनुष्यों (प्राणधारियों) के आधारभूत बहुत प्रकार के अन्नों का उत्पादन करता है । धन से परिपूर्ण होकर जनता के दुःखों का हरण करता है । गुरूजनों का शिष्य ही जगत में धनपति कहलाता है ।३३।

नु कष्टं दृष्ट्वायो द्रवति खलु शूद्रो मृदुमनः,
नन्वाचार्य्यस्येहैव स हितरतो वाचि मधुरः ।

तथा शुद्धैर्भावैस्सुविमलशरीरं शुभमनाः,
सुसेवाधर्मो यस्य भवति हि शूद्रो यतिवरः ।३४।

भावार्थ—आचार्य्य का वह शिष्य जो दूसरों का कष्ट देखकर मन से पिघल जाता है। दूसरे के हित में लगा हुआ, वाणी से मीठा, शुद्ध भावों से जिसका शरीर और मन पवित्र है, सेवा धर्म वाला शूद्र यतियों में श्रेष्ठ होता है।३४।

महातेजस्वी ते भुवि भवतु तेजो मम गुरोः,
यदान्तश्शान्तिर्वो भवतु भवशान्तिश्च सुषमा।
तदाविद्याऽविद्यामपहरतु पापस्य तिमिरम्,
ममाचार्य्यो लोके वितरतु विज्ञानस्य च निधिम् ।३५।

भावार्थ—हे महातेज ! मेरे गुरु ! तेरा तेज धरती पर होवे। तब आपकी आन्तरिक शान्ति सारे संसार के लिए शान्ति बनकर सुखदायी होगी। तब आपकी विद्या अज्ञान के अन्धकार को दूर कर आचार्य्य ! संसार में विज्ञान की निधि को बांट दे।३५।

ममाप्यन्तर्ज्ञानं प्रकटयतु गुह्यं हि निखिलम्,
नमस्ते सानन्दं गुरुसुचरणेषु प्रतिदिनम्।
गुरोरिन्दोरश्मीव तव वचनैरार्द्रसुममनाः,
ममाचार्य्यो नित्यं निवसतु च मोक्षेषु कुशलः ।३६।

भावार्थ—आर्य गुरुवर्य्य। आप मेरे हृदय में स्थित छिपे ज्ञान को प्रकट कीजिए। मैं आपके चरणों में आनन्द-पूर्वक प्रतिदिन नमन करता हूं। हे विद्या देवता, आपके वचनों से शिष्यों का मन पसीज जाता है जैसे चन्द्रमा की किरणों से सबका मन प्रमुदित हो जाता है। ऐसे मेरे आचार्य्य ! आप सदा बन्धनरहित कुशलपूर्वक लोक में निवास करें।३६।

सुसौभाग्यं भद्रं जनयति हि नित्यं कुलगुरुः,
गुरूणामाशीभिर्भवति सुखवर्षा च सततम्।
यदास्माकं विद्या निखिलजनबालेषु निहिता,
तदानृण्यं भूयाच्च गुरुकुल भूमौ मम गुरोः।३७।

भावार्थ—हमारे कुलगुरु सदा कल्याणप्रद सौभाग्य को जन्म देते हैं, जिससे हमारे ऊपर सदा सुख की वर्षा होती रहती है। तब गुरुजनों से प्राप्त विद्या सकल मनुष्यों और उनके बालकों के हृदय में विराजमान होगी। तब हम गुरु के ऋण से उऋण होंगे।३७।

कथं भ्रान्तो लोको भ्रमति खलु मिथ्यैव भुवने,
न सान्निध्यं नूनं परमविभुज्ञानस्य च विभोः।
विना तस्माल्लोके न भवति मनुष्यस्य सुगतिः,
अतः पूर्णं सर्वं भवतु बहुवेदाधिगमनम्।३८।

भावार्थ–संसार में मनुज भ्रान्त हुआ मिथ्या ही घूमता है। उसे परम व्यापक ज्ञानी प्रभु से सान्निध्य नहीं होता। उसके बिना मनुष्य की अच्छी गति नहीं होती। इसलिए पहले निश्चय के साथ सम्पूर्ण वेद विद्याओं की प्राप्ति करनी चाहिए।३८।

गुरौ श्रद्धा श्लाघ्या शिरसि विभुभक्तिश्च नितराम्,
स्वराष्ट्रे निष्ठा वै भवति बलिदानं च विविधम्।
सदाचार्य्यैर्नूनं खलु नियतिलभ्यं शिवयशः,
सुशिष्यैश्च प्राप्तं सपदि खलु वीर्य्यं दृढवपुः।३९।

भावार्थ–शिष्यों की गुरुजनों में प्रशंसनीय श्रद्धा और मस्तिष्क में व्यापक प्रभु की निरन्तर भक्ति रहती है। अपने देश के प्रति निष्ठा और अनेक प्रकार से बलिदान देने की भावना होती है। सदैव आचार्य्य की कृपा से भाग्य में कल्याणप्रद यश निहित होता है। शिष्य वर्ग को बलवान् वज्रतुल्य शरीर की प्राप्ति होती है।३९।

विना ज्ञानं ध्यानं भुवि मनुजरूपे खलु पशुः,
तथाहारं निद्रा सम भवति भूयो नर पशुः।
सुवासासंवासो हि जगति मनुष्ये षु बहुलम्,
भयवृन्दं त्यक्त्वा बहुविविध विद्याः सुपठ रे।४०।

भावार्थ—मनुष्य ज्ञान और ध्यान के बिना मनुष्य रूप में पशु है। आहार और निद्रा में मनुष्य और पशु बराबर हैं। परन्तु स्त्री सहवास में पशु से मनुष्य आगे है। अतः भय आदि चार व्यसनों को छोड़ कर विविध विद्याओं का अध्ययन करना चाहिए। तब मनुष्य जीवन सफल होगा।४०।

महाधीरश्शिष्यस्स्पृहयति सुविद्याप्रपठनम्,
सतां सर्वैश्चादिष्टमिह तपसा सिद्धिमहती।
नु शिष्टाचाराद्वै भवति न सु चित्तं च विमलम्,
सुसौभाग्यादाप्तं जगति किल विद्याव्रतमिदम्।४१।

भावार्थ—धैर्यशाली शिष्य सदा विद्या पढ़ने की इच्छा करता है। सज्जनों को विद्या की सिद्धि तप से होती है। ऐसा सबने कहा है। शिष्टाचार से मन पवित्र होता है। इस संसार में विद्या का व्रत सौभाग्य से प्राप्त होता है।४१।

अहो ! शिष्यानां योऽनुभवति नु कष्टं निजमिव,
तथानन्दं तेषां मनसि निजमोदं च मनुते।
महायोगी श्रीमान् हरति मम पापं च नितराम्,
गुरुं वन्दे नित्यं सकलसुखदातारमनघम्।४२।

भावार्थ—अहो ! हमारे आचार्य शिष्य के कष्ट को अपना कष्ट मानते हैं। वैसे ही उनके आनन्द को अपना आनन्द मानते हैं। श्रीमान् महान् योगी आचार्य निरन्तर हमारे अज्ञानरूपी पाप का हरण करते रहते हैं। ऐसे अनुपम गुरु का, जो सम्पूर्ण सुखों के दाता हैं, मैं नित्य अभिवादन करता हूं।४२।

महादोषेभ्योऽहं गुरुकुल निवासे विरहितः,
न चापल्यं गोष्ठी ननु पठनकाले समुचितम्।
न चालस्यं मोहो ननु पठनयुक्तस्य हि शिवः
मदोऽहंकारश्शिष्यपरमगुरुभ्यश्च दुरितम् ॥४३॥

भावार्थ-मैं छात्र गुरुकुल निवास के समय सब दोषों से विमुक्त रहता था, क्योंकि चंचलता और व्यर्थ वितण्डा भी पठन समय में उचित नहीं होता। आलस्य और मोह विद्यार्थी के लिए कल्याणकारक नहीं होता। मद और अहंकार दोनों के लिए पाप हैं।४३।

यमानामाधानं भवति भुवि नित्यं गुरुकुले,
अचौर्य्यं सत्यं च प्रतिदिनमहिंसाव्रतरुचिः।
तथा ब्रह्मचारी वटुगुरुजनानां च चरिते,
बहुश्रेयस्तेषां यदि भवतु वै वस्त्वनिचयम्।४४।

भावार्थ—गुरुकुल की धरती पर नियन्त्रण रखा जाता है। अहिंसा, सत्य, अचौर्य और ब्रह्मचर्य व्रतों का पालन होता है। आवश्यकता से अधिक वस्तु में लगाव नहीं होता।४४।

नियम्य स्वात्मानं जगति नियमैर्लौकिकसुखम्,
सुशौचं नित्यं वै चितिवचनकायेषु नियतम्।
कृते कार्ये तुष्टिश्च बहुतपसाऽप्तं शुभफलम्,
प्रभोः पादे स्थानं भवति गुरुशिष्येषु सुदृढम्।४५।

भावार्थ—यमों के साथ नियमों का पालन भी आवश्यक है। मन, वचन और शरीर में पवित्रता, परिश्रम के पश्चात् प्राप्त फल में ही सन्तोष, तप करके सुख प्राप्ति और अन्त में ईश्वर का सान्निध्य गुरुकुल में गुरु और शिष्य में दृढ़ होता है।४५।

कृतं विद्यास्नानं तदनु विभुयोगे धृतमनाः,
सदा व्यायामैर्भात्यतिबलबलिष्ठं दृढवपुः।
ध्रुवा विद्यागोष्ठीषु वटुजनचित्ते बहु रुचिः,
इयं संस्था यत्रापि गुरुकुलसुभद्रं भवतु नः।४६।

भावार्थ—हमने विद्या स्नान करके प्रभु योग में मन को लगा लिया है। नित्य व्यायाम से हमारा अति बलिष्ठ

दृढ़ शरीर सदैव दमकता है। हमारे चित्तों में विद्या की गोष्ठियों की सदा प्रबल इच्छा बनी रहती है। ऐसी व्यवस्था जहाँ होती है, वह गुरुकुल सदा-सदा हमारे लिए कल्याणकारी हो।४६।

शिरोभद्रं भूयान्मनसि च विवेको बहुविधः,
भवेद् गुप्तं दानं च सुनमितनेत्रं नतमुखम्।
प्रियं कृत्वा मौनं हृदि च शुभस्नेहं नु सततम्,
वरं कल्याणं वै भवतु गुरुशिष्येषु सुतराम्।४७।

भावार्थ—हे प्रभु, गुरुकुलवासियों के चिन्तन के स्थान मस्तिष्क में नीर-क्षीर का विवेक हो। भला करके चुप रहना तथा हृदय में प्यार और परोपकार करने की भावना स्थिर रहे। गुरु-शिष्यों में हमेशा शुभ कल्याण बना रहे।४७।

स जातो यस्यात्मा प्रकटयति कीर्तिं च जननीम्,
प्रसिद्धो जायेद्वै जगति गुरुगोत्रं खलु कुलम्।
सुदूरं विख्यातश्च त्रिभुवनविश्वे ननु गुरुः,
गुरुर्वन्द्यः श्रीमान् ददतु निजविद्याशुभफलम्।४८।

भावार्थ—संसार में उसे उत्पन्न हुआ जानिये, जो जन्म देने वाली माँ को और कीर्ति को जनाता है। लोक में

जिससे गुरु, गोत्र तथा कुल को प्रसिद्धि होती है। सम्पूर्ण त्रिभुवन में दूर-दूर तक जिसका गुरु विख्यात होता है। ऐसे गुरुवर्य्य से प्रार्थना है कि वे सदा-सदा विद्या रूपी फल को प्रदान करते रहें।४८।

अवश्यं भुक्तं वै विहितमिह दुष्कर्मचरितम्,
जनिक्लेशस्सोढस्तदनु च बुभुक्षादि सहजा।
किमाश्चर्य्यं लोकेऽनुभवति न दुःखं यदि जनः,
इदं चाश्चर्य्यं यैः कथमपि न प्राप्तं गुरुकुलम्।४९।

भावार्थ—पूर्व जन्म के अनुसार किए हुए दुष्कर्म का फल अवश्य भोग लिया। इस जन्म में जन्म लेने के दुःख को तथा भूख को भी बर्दाश्त किया। यह कोई आश्चर्य नहीं कि मनुष्य दुःख भोगता है। बस, आश्चर्य यह है कि इन मनुष्यों ने गुरुकुल क्यों प्राप्त नहीं किया।४९।

निगृह्य गृहस्येह परिजन मोहं गुरुकुले,
गुरोस्सन्निधौ नो बहुमननयुक्तास्सुमतयः।
तस्माद् भूयन्ते ते ननु जगति छात्राश्चतुराः,
अतो नो वाञ्छा बहु भवतु देशे गुरुकुलम्।५०।

भावार्थ—गुरुकुल में परिवार का मोह रोककर गुरु के पास जाकर हमारी बुद्धि सोचने योग्य बन गई। इस कारण

शिष्यजन अति निपुण बन जाते हैं। इसलिए हमारी इच्छा है कि देश में बड़ी संख्या में गुरुकुल हों।५०।

सुखं विद्यायत्तं विकसति च नूनं गुरुकुले,
गुरोश्चित्ते विद्या विनयजनसस्साप्यनुगता।
गुरोश्चाधीतां तां विभजति च शिष्यस्त्रिभुवने,
यया युक्तो लोकः परमसुखमोदं च लभते।५१।

भावार्थ—विद्या से प्राप्त सुख गुरुकुल में विकसित होता है, परन्तु विद्या गुरु के मन में रहती है। वह विद्या विनीत शिष्यों के पीछे दौड़ती है। शिष्य भी वे होते हैं, जो गुरु से प्राप्त विद्या को संसार में बांटते हैं, जिस विद्या से जनता परम सुख को प्राप्त करती है।५१।

गिरीणां शृंगेष्वत्र रविशशिशोभा सुमहती,
नदीनामिष्टं नीरमपि परितापं हरति यद्।
अरण्येषूद्भूता कुसुमसुरभिश्चेह भरिता,
फलानामास्वादैश्च मुनिजनमुग्धो गुरुकुले।५२।

भावार्थ—पर्वतों के शिखर पर सूर्य-चन्द्र को बहुत शोभा है। नदियों का मधुर जल यहाँ परिताप को हरता है। वनों में उत्पन्न पुष्पों की सुगन्ध वातावरण में भरी

हुई है। यहां गुरुकुल में तपस्वी फलों के स्वाद से मुग्ध हैं ।५२।

तपस्वीनां भूमौ हि विचरति नित्यं पशुकुलम्,
रसालानां कुंजेषु दधति संगीतं च मधुपः ।
मृगेन्द्राणां घोषैर्भयरहितजाताश्च मनुजाः,
मयूराणां नृत्यं तु रमयति भूमिं गुरुकुले ।५३।

भावार्थ—वन के पशु तपस्वियों को भूमि पर नित्य विचरते हैं। आम के वृक्षों के झुरमुट में भौंरे संगत करते हैं। सिंहों की गर्जना से कुलवासी जन भयरहित हो जाते हैं। मयूरों का नृत्य गुरुकुल प्रांगण को सजा रहा है ।५३।

स्मरस्य बाणा हि भवन्ति मोघाः,
सृजन्ति शोभां शशिरश्मयो याः ।
मृगैस्सहैवेह चरन्ति सिंहाः,
गुरोर्विचित्रा हि निवासभूमिः ।५४।

भावार्थ—जिस भूमि में कामदेव के बाण विफल हो हो जाते हैं, जहां चन्द्रमा की किरण सुषमा का सृजन करती है। हिरण और सिंह जहां साथ ही घूमते हैं। यह गुरुजनों को निवासभूमि अति विचित्र है ।५४। उपेन्द्रवज्रा छंद

मयूरशब्दैश्च द्रवन्ति सर्पाः,
रटन्ति शब्दं च जलेषु भेकाः।
वृक्षेषु पुष्पेषु भ्रमन्ति भृंगाः,
गुरोर्विशोका हि निवासभूमिः ।५५।

भावार्थ—गुरुकुल भूमि पर मोरों के शब्दों से सांप व्याकुल होकर दौड़ जाते हैं। जल में मेंढक टर्र-टर्र करते हैं। वृक्षों के पुष्पों पर भ्रमर उड़ते रहते हैं। यह गुरुजनों की निवास भूमि शोकरहित है ।५५।

उषासु रम्भेति कुर्वन्ति गावः
हर्षेण दुग्धानि पिबन्ति वत्साः।
जलेन पूर्णाश्च वहन्ति नद्यः,
गुरोर्विमोहा हि निवासभूमिः ।५६।

भावार्थ—ब्राह्ममुहूर्त्त में गौ रम्भाती है। बछड़े प्रसन्नतापूर्वक दूध पीते हैं। जल से भरी नदियां जहां बह रही हैं, गुरुजनों को ऐसी निवासभूमि आकर्षण वाली है ।४७।

लतासु वृक्षेषु पत्रेषु नीडाः,
सदैव कूजन्ति खगाः प्रभाते।
हरन्ति चित्तं प्रसभं वटूनां,
मनोहरा वै गुरुवासभूमिः ।५७।

भावार्थ—जिन्होंने लताओं, वृक्षों एवं पत्तों पर घोंसले बनाए हुए हैं। सदा उषा काल में वे पक्षीगण चहचहाते हैं। वह चहचहाना छात्रों के मनों को बलात् आकृष्ट करता है। यह गुरुकुल भूमि बहुत सुन्दर है।५७।

पलाशपुष्पस्य यथाहि रूपं,
तथाहि गन्धाच्च सदा विदूरम्।
विभाति नित्यं ननु ब्रह्मचारी,
विराजते वै गुरुवासभूमिः।५८।

भावार्थ—ढाक के पुष्प का जैसा सुन्दर रूप है, वैसे वह सुगन्ध से दूर है और गन्धादि से रहित ब्रह्मचारी तेज से चमकता है। वैसे ही गुरुजनों की यह निवास भूमि दीप्त है।५८।

बहूनि सन्तीह कुलानि पूर्वं,
बभूव मेधा तपसा प्रबुद्धा।
पठन्ति शास्त्रं च मनोऽनुकूलं,
उपह्वरे ये च वसन्ति साध्याः।५९।

भावार्थ—संसार में पहले समय में बहुत गुरुकुल थे। वहां परिश्रम से तपस्वियों की बुद्धि तीव्र होती थी। आज भी वे विद्यार्थी मन के अनुसार शास्त्र पढ़ते हैं। साधना में लगे जन पर्वत की तलहटी में बसते थे।५९।

स्वतः प्रमाण ननु वेदज्ञानं,
शुकांगनाश्चात्र गिरन्ति वाचम् ।
शृणोति शब्दं खलु छात्रवर्गः,
तथा करोत्यत्र सदैव सत्यम् ।६०।

भावार्थ—निश्चय से वेद ज्ञान स्वतः प्रमाण है। इस प्रकार गुरुकुलों में तोतियां बोलती हैं और उसे सुनकर छात्र वर्ग भी वैसे ही बोलता है। यह सत्य है।६०।

कुले प्रसूतिं च सुचारुशीलं,
महामनोज्ञं नवज्ञानरूपम् ।
नमन्ति देवं च विनीतभावं,
अतो विभाव्या कुलवासभूमिः ।६१।

भावार्थ—गुरुकुलों में ऐसे महानुभाव रहते हैं, जिनका जन्म अच्छे और ऊंचे वंश में हुआ। छात्र सुन्दर स्वभाव वाले, शरीर से बहुत मनोहर, नवज्ञानस्वरूप, विनम्र भाव वाले गुरुदेव को नमन करते हैं। इसलिए गुरुकुलों की निवास भूमि विशेष तथा कमनीया है।६१।

गुरोर्दयां यत्र धरन्ति शिष्याः,
सुखस्य नद्योऽत्र वहन्ति नित्यम् ।

सरस्वती चापि विभाति वन्द्या,
उदारशीला ऋषिकामभूमिः ।६२।

भावार्थ—जहां शिष्य शिक्षकों की दया को हृदय में धारण करते हैं, वहीं सुख की नदियां बहती है। यहाँ वन्दनीया सरस्वती सुशोभित होती है। ऐसी हमारी गुरु-शिष्यों की कामना पूर्ण करने वाली उदारशीला भूमि है।६२।

वृद्धेषु श्रद्धां च दधन्ति छात्राः,
गुरोश्च पादेषु नमन्ति भालम् ।
द्रुमस्य छायासु वसन्ति सर्वे,
परोपकारेण विभाति भूमिः ।६३।

भावार्थ—यहाँ विद्यार्थी वयोवृद्धों के प्रति श्रद्धा धारण करते हुए गुरुओं के चरणों में सिर नवाते हैं। वृक्षों की छाया में रहते हैं। परोपकार से गुरुकुल भूमि रम्य लगती है।६३।

शिलातले चारु भुजोपधानं,
यज्ञोपवीतं खलु धारयन्तः ।
हिरण्यवर्णां ननु मेखलां वै,
वहन्ति विद्यां निकटं गुरुणाम् ।६४।

भावार्थ—छात्र जहां पत्थर के पट्टों पर सुन्दर भुजाओं का तकिया लगाये हैं; यज्ञोपवीत को धारण करते हुए स्वर्ण वर्ण की तगड़ी धारण करते हैं। अध्यापकों के निकट रहकर विद्याध्ययन करते हैं।६४।

कुटीरमध्ये किल हव्यवाहं,
दधाति यज्ञं बहुगन्धयुक्तम् ।
विभाति शुष्कैश्च नभस्समिद्भिः,
अहो ! सुरम्या खलु यागभूमिः ।६५।

भावार्थ—कुटियों में अग्नि बहुत सुगन्धि वाले यज्ञ को धारण करती है। आकाश सूखी समिधाओं से सुशोभित है। अहो, यहां यज्ञ की भूमि कितनी सुरम्य है।६५।

न चात्र क्लेशं जनताविद्वेषं,
भजन्ति देवाश्च महामहेशम् ।
स्तुवन्ति नित्यं नु गुरुं गुणेशम्,
सदैव पूज्या मम देवभूमिः ।६६।

भावार्थ—इस गुरुकुल में कष्ट नहीं, परस्पर द्वेष नहीं। नित्य देवाधिदेव महादेव की पूजा करते हैं। विद्यार्थी-जन गुणों के बल पर शासन करने वाले और गुणों के स्वामी गुरु की स्तुति करते हैं।६६।

ध्रुवं श्रुतं वेदविदां वरे यं,
विद्यासु दीक्षां नु ददाति छात्रम् ।
करोमि श्रद्धां चरणेषु निष्ठां,
ददातु देवस्सुधियं हि मह्यम् ।६७।

भावार्थ—आर्यं ! वेदज्ञों में अति श्रेष्ठ ! आपके सम्बंध में ठीक ही सुना है कि आप छात्रों को विद्या में अच्छी दीक्षा देते हैं । अतः आपके चरणों में रहने की मेरी श्रद्धा और निष्ठा है । मेरे देवता, मुझे भी अच्छी बुद्धि प्रदान कीजिए ।६७।

न चात्र विद्या नु धनेन क्रीता,
न चापि वस्त्रं हि धनैर्गृहीतम् ।
सदा च भोज्यं नु जनैः प्रदत्तम्,
धनादिपूर्णा किल देवभूमिः ।६८।

भावार्थ—गुरुकुल में धन से विद्या नहीं खरीदी जाती । वस्त्र भी धन से नहीं लिये जाते । जनता भोजन आदि प्रदान करती है । इसलिए देव भूमि गुरुकुल सदा धनादि से पूर्ण रहती है ।६८।

न जातिभेदो न कुलाभिमानो
जनेषु सर्वेषु समानभावः ।

न कोऽप्यस्पृश्यश्च मनुष्यजातः
मनुष्यजातीति बुधैर्विचारः ।६९।

भावार्थ—गुरुकुल में जाति का भेदभाव नहीं। कुल का अभिमान नहीं। सब मनुष्यों में समभाव होता है, मनुष्यों में उत्पन्न कोई अछूत नहीं होता। विद्वानों का विचार है कि मनुष्यों को एक ही जाति है।

समान—वस्त्रं च समान—भोज्यं,
समान—ज्ञानं च समानवासः।
समा सभा सा सममित्रभावः
सर्वं समानं कथनं समानम् ।७०।

भावार्थ—गुरुकुल में एक जैसे वस्त्र एवं एक जैसा भोजन होता है। ज्ञान भी समान ही दिया जाता है। समान आवास—व्यवस्था होती है। सभा में एक जैसा व्यवहार होता है। समान मैत्री और समान भाषा होती है ।७०।

श्रमेण छात्रास्तु वृक्षांश्च नित्यं,
घटस्य नीरैरथ पालयन्तः।
पशून् हि शस्यैर्बहु—वर्धयन्तः,
पिबन्ति दुग्धं च रसं फलानाम् । ७१ ।

भावार्थ—गुरुकुल में छात्र मेहनत से घड़ों के जल से वृक्षों का पालन करते हुए तथा घास से पशुओं को बढ़ाते हुए दुग्ध और रसों का पान करते हैं ।७१।

विहाय द्वेषं पशवोऽपि हिंस्राः,
चरन्ति साकं च पिबन्ति नीरम् ।
हिंस्रस्स्वभावः खलु याति तेषाम्,
अहो ! गुरूणां सुखदा हि भूमिः ।७२।

भावार्थ—गुरुकुल में हिंसक पशु द्वेष को छोड़कर साथ-साथ विचरते हैं, साथ-साथ ही पानी पीते हैं । उनका हिंसक स्वभाव जाता रहता है । इस प्रकार गुरुओं की भूमि सुख देने वाली है ।७२।

धर्मानुकूलाः गुरु—धर्म—भूमौ,
भवन्ति सर्वे मननान्मनुष्याः ।
मनीषिणः सन्ति सदा मनुष्याः,
धरन्ति धर्मं सततं मनुष्याः ।७३।

भावार्थ—गुरु की भूमि पर मनन करने से मनुष्य धार्मिक होते हैं । सदा बुद्धिमान् होते हैं । मनुष्य निरन्तर धर्म को धारण करते हैं ।७३।

करोतु देवस्सुदयां विधाता,
तनोतु देशेषु च देवभाषाम् ।
ददातु धर्मं च जहातु दुःखं,
करोतु स्वर्गं मम देवभूमौ ।७४।

भावार्थ—जगन्निर्माता देव प्रभु, दया करो। सभी देशों में संस्कृत भाषा का विस्तार करो। धर्म को दो, दुःख को दूर करो। मेरी देवभूमि पर स्वर्ग का निर्माण करो ।७४।

आर्य ! गुरो ! सरलं भुवि संस्कृतं,
सुलिखितं पठनं हि यथा तथा।
सुमधुर विदितं च भुवस्तले,
गुरुकुलेऽध्ययनं बहुसंस्कृतम् ।७५।

भावार्थ—आर्य ! गुरुवर्य्य ! सारी धरती पर संस्कृत ही सरलतम भाषा है। देवनागरी में जैसा लिखा जाता है, वैसा ही पढ़ा जाता है। इस भाषा को संसार भर में बहुत मधुर जाना गया है। इसलिए गुरुकुल में इसका अध्ययन होता है ।७५। द्रुत विलम्बित छन्द ।

गुरुकुलानि बहूनि च भारते,
मुनिवरैः रचितानि पुराविदैः ।

गुरुकुलेषु वसन्ति सुसज्जनाः,
निखिलदोष–विवर्जित–मानवाः ।७६।

भावार्थ—भारत में श्रेष्ठ मुनियों ने पहले गुरुकुलों को बनाया था । उनमें निर्दोष सज्जन निवास करते थे ।७६।

जगति वेदपुराणशिक्षादिकं,
विविधव्याकरणं षड्दर्शनम् ।
गुरुकुले पठनं यदि रोचते,
पठतु रे ! प्रथमं ननु संस्कृतम् ।७७।

भावार्थ—संसार में पहले भी वेद-पुराण और अनेक प्रकार का व्याकरण और छह दर्शन थे । अब भी यदि उन्हें गुरुकुल में पढ़ने की इच्छा है तो पहले संस्कृत पढ़ें ।७७ ।

सन्तोषमात्रमिह ज्ञापयति प्रतिष्ठा,
हर्षं करोति परमं निज–शिष्य–रक्षा ।
आचार्य्यवर्णिरक्षणाय करोति यत्नम्,
इच्छा च नो ननु भवेद्धि नरेषु रत्नम् ।७८।

भावार्थ—आचार्य्य जी को पद प्रतिष्ठा तो थोड़ा-सा सन्तोष मात्र प्रदान करती है । परन्तु अपने शिष्यों की रक्षा

परम आनन्द को पैदा करती है। इसलिए आचार्य्य जी ब्रह्मचारियों की रक्षा के लिए यत्न करते हैं। हमारी इच्छा है कि वे नर रत्न हों।७८। वसन्ततिलका छन्द।

विद्यानिधेः कुलनिवास विभाति सत्यम्,
पंचत्वमेति नियते समये शरीरम्।
तस्येह तिष्ठति महिमा स्थिरा च मेधा
विद्या सुकीर्तिरचला महती जगत्याम्।७९।

भावार्थ—विद्या के सागर गुरु का गुरुकुल में नित्य निवास शोभा देता है। परन्तु नियत समय पर शरीर पंच-तत्त्वों में विलीन हो जाता है। गुरुजनों की महिमा और ज्ञान हमेशा स्थिर रहता है। जगत् में महत्त्वशाली विद्या और अचल कीर्ति रहती है।७९।

क्रीडासु तत्परतयायतदीर्घकायाः
चंचद् भ्रमन्ति हि जटाश्च सुलम्बप्राणाः।
आत्माश्रमैस्सुबहुलैश्च विजातस्वेदाः,
क्रीडन्त्यमी कुलजनैश्च सहैव छात्राः।८०।

भावार्थ—क्रीड़ा में तत्परता से जिनके फैले हुए लम्बें शरीर हैं। जिनकी चमकती हुई जटायें बिखर रही हैं। लम्बे श्वास आ रहे हैं। बहुत मेहनत से उन्हें पसीने आ

गये हैं। ऐसे विद्यार्थी अपने कुलवासियों के साथ खेल रहे हैं।८०।

अहो महान्नो बहुकांक्षितो गुरुः,
ददाति विद्या मणिभूषणानि यः।
विराजते वै गललम्बिनी जटा,
सुभालदेशे किल हेमपिंगला।८१।

भावार्थ—अहो! हमारे वांछित गुरु महान् हैं, जो हमें विद्या रूपी मणि आदि आभूषणों को देते हैं। वे बहुत ही शोभायमान लगते हैं—जब उनकी स्वर्ण वर्ण की कण्ठ तक लटकने वाली जटा मस्तिष्क पर होती है।८१। वशांस्थ वृत्त छन्द।

मम व्रतैस्त्वं खलु योगयोग्यताम्,
विधेहि शिष्यो भव मूर्ध्नि तापसाम्।
इदं च सर्वं कुलगौरवं गुरोः,
विभाति यस्यात्र सुसंचितं तपः।८२।

भावार्थ—हे शिष्य! मेरे व्रतों से तुम योग योग्यता को धारण करो। तपस्वियों के शिरोमणि बनो! गुरुकुल में जो कुछ गौरव है, यह गुरु महोदय का है, जिनका संचित तप यहां विराजता है।८२।

यथा गुरूणां चरितं दयायुतम्,
तथाहि वृत्तं च करोतु स्वात्मनः ।
यथा च नित्यं हृदये च कामनाः,
तथा दधत्वत्र कुले हि भावनाः ।८३।

भावार्थ—गुरु उपदेश करते हैं—जैसे तुम्हारे गुरुजनों का दया से परिपूर्ण चरित्र था, वैसा ही तुम अपने चरित्र को बनाओ । जैसे तुम्हारे हृदयों में कामनायें अपने लिए हैं, वैसी ही भावनाओं को गुरुकुल के प्रति धारण करो ।८३।

पित्रोरनुगतं वित्तं नूनमेति सदा क्षयम्,
यत्प्राप्यते तपस्विभ्यो नित्यं तदक्षयं धनम् ।८४।

भावार्थ—पितृ जनों से आगत धन निश्चय से सदा नाश को प्राप्त होता है, जो तपस्वियों से विद्या और यश रूपी धन प्राप्त होता है, वह नष्ट नहीं होता ।८४। अनुष्टुप् छन्द ।

प्राप्य विद्याधनं भुवि भवेन्नरस्सदा सुखी,
निर्भयो याति सर्वत्र क्वचिच्च न भवेद् भयम् ।८५।

भावार्थ—संसार में विद्या धन प्राप्त करके मनुष्य सदा सुखी होता है । सब जगह निर्भय होकर विचरता है । उसे कहीं पर भय नहीं होता ।८५।

आचार्य्योऽति विनम्रश्च, वेदशास्त्रेषु पारगः ।
पंचयज्ञेषु दीक्षितस्संस्कारकरणे पटुः ।८६।

भावार्थ—आचार्य अति विनम्र, वेद शास्त्रों में पारङ्गत, पंच यज्ञ करने में दीक्षित तथा संस्कार करने में निपुण होता है ।८६।

गुरोरिदं कलेवरं तुच्छभोक्तुं न निर्मितम् ।
योगक्षेमार्जनायेह तथानन्तसुखाय वै ।८७।

भावार्थ—आचार्य का शरीर तुच्छ भोगों के लिए नहीं बनाया गया । वह तो अप्राप्त की प्राप्ति तथा प्राप्त की रक्षा एवं मोक्ष सुख लाभार्थ बनाया गया है ।८७।

दैवीप्रजासु जायेत जन्माचार्य्यजनस्य हि ।
प्रवहति सरस्वती हृदस्य तले सदा ।।८८।

भावार्थ—आचार्य जनों का जन्म दैवी प्रजाओं में होता है । उनकी हृदय भूमि पर सदैव सरस्वती प्रवाहित रहती है ।८७।

ज्ञानार्थं ब्रह्मचर्य्यंतु धनार्थं च गृही महान् ।
स्वाध्यायाय वनस्थस्तु संन्यासस्तु विमुक्तये ।८९।

भावार्थ—संसार में मनुष्य ज्ञानार्जन के लिए ब्रह्मचर्य व्रती, धन के लिए गृहस्थी, स्वाध्याय वृद्धि के लिए वानप्रस्थी और मोक्ष प्राप्ति के लिए संन्यासी बनते हैं ।८९।

ज्ञानमनन्तपारं तु यथैव विभुर्नभः,
तयोरन्तं तु वेत्ति यः तमाहुः पण्डितं बुधाः ।९०।

भावार्थ—जिस प्रकार आकाश और परमात्मा का आर-पार नहीं, उसी प्रकार गुरु के ज्ञान की सीमा नहीं । प्रभु तथा ज्ञान के अंतिम तत्त्व को जो जानता है, उसे बुद्धिमान पण्डित कहते हैं ।९०।

स्नातको यो वसुव्रंती गृहे सुखेषु वर्धते ।
भुनक्ति केवलं भोगं न मोक्षमधिगम्यते ।९१

भावार्थ—जो व्रत स्नातक होता है, वह घर के सुखों में बढ़ता है । केवल सांसारिक भोग भोगता है । उससे मोक्ष का आनन्द प्राप्त नहीं किया जा सकता ।९१।

यो विद्या स्नातको ध्रुवं रुद्रसंज्ञो भवेच्च सः
स रोदयति दुष्टान्तु रुद्ररूपी जनेश्वरः ।९२।

भावार्थ—जो विद्या पूर्ण करके स्नातक होता है, वह रुद्रसंज्ञक है । दुष्टों को रुलाता है, रुद्र रूप होकर मनुष्यों का राजा बनता है ।९२।

कुलाद्विद्याव्रती जातो भवत्यादित्यसदृशः ।
सुदीर्घायुर्महाभुजो भवत्यत्र सुखावहः ।९३।

भावार्थ—गुरुकुल से बने विद्याव्रत स्नातक सूर्य के समान तेजस्वी, दीर्घायु, आजानुबाहु और इस लोक में सुखों का उपभोग करने वाला होता है ।९३।

हवींषि खलु विद्याग्नौ जुह्वतिस्म परस्परम् ।
संकल्पितानि यानि तु स्थितानि हृदि सर्वदा ।९४

भावार्थ—गुरु शिष्य विद्या की अग्नि में मन में सदा स्थित जो संकल्प है, उनकी सामग्री बनाकर आहुति देते हैं ।९४।

वयमतिपरितुष्टाः जांगलैः कन्दमूलैः,
मनसि च बहुमोदो वल्कलैर्नो न क्षौमैः ।

सकलजगति छात्राः सन्ति ते नैव नम्राः,
ननु गुरुकुलछात्राः विद्यया वै विनम्राः ।६५।

भावार्थ—हम गुरुकुलवासी जंगली कन्द मूल खाकर संतुष्ट रहते हैं। हमारे मन को जो प्रसन्नता वृक्षों की छालों को पहनने से होती है, वह शाल-दुशालों से नहीं होती। संसार में छात्र तो बहुत हैं परन्तु विनम्र नहीं। गुरुकुल के छात्र वेद-विद्या पढ़कर विनम्र होते हैं ।६५। मालिनि छन्द ।

श्रुतिगतसुलभं ज्ञानं विज्ञानं च गुरुभ्यः,
सुधनमिह हि विद्या सर्वदा वै मुखश्रीः ।
बहुनवविध शोधं बोधगम्यं गुरूणाम्,
न भवति खलु लक्ष्मीकारणं पाठकानाम् ।६६।

भावार्थ—गुरुकुल में गुरुजनों से वेद का ज्ञान-विज्ञान सहज प्राप्त हो जाता है। यहां यदि धन है तो विद्या धन है, जिससे मुख की शोभा है। गुरु वर्ग द्वारा किये गये शोध ग्रन्थों से बोध होता है। सबसे बड़ी बात यह है कि पढ़ने वालों की पढ़ाई में धन कारण नहीं होता ।६६।

जनयति भुवि कल्याणं सुसाधुवृत्तं वै,
नियमयति हि छात्रानाप्तविद्वांस्तु नित्यम् ।

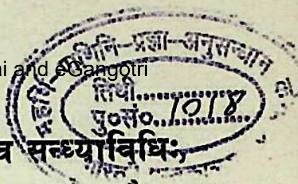
सुवितरति च सर्वं विद्यते छात्रहेतोः,
भुवि तव परिपूर्णं शिष्यकार्यं तु जातम् ।९७।

भावार्थ—गुरुकुल में उपाध्याय वर्ग कुलवासियों के लिए अच्छे चरित्र और कल्याण के कार्य करते हैं। गुरुजन अपने शिष्यों को मर्यादा में रखते हैं। अध्यापकों के पास जो कुछ है, छात्रों के हितार्थ है। वे सभी कुछ शिष्यों को बांट देते हैं ।९७।

रचयति निजप्रेम्णा बालकानत्र शिष्यान्,
अपहरति च कष्टानाश्रमे तापसानाम् ।
जनयति चरिते सत्कारधर्मंच साम्यम्,
कथमपि न विषादो नैव मोहश्च द्रोहः ।९८।

भावार्थ—आचार्य अपने प्रेम से छोटे-छोटे बालकों और शिष्यों का निर्माण करते हैं। वे गुरुकुल में तपश्चर्य्या करने वालों के कष्टों का निवारण करते हैं। आश्रम के व्यवहार में स्वागत-सत्कार धर्म और समता पैदा की जाती है। इस कुल में कोई विवाद, मोह और द्रोह नहीं होता ।९८।

आचार्य्यप्रवरेण साधु रचिता साध्वी च यत्नात्कुटी,
तत्राभ्यासमुपासते ननु मुनिर्मोक्षाय वै श्रेयसे ।



ध्यानं पूतधरातलेषु विहितो नित्यं च सन्ध्याविधिः,
आवासे सुलभं च भोजनफलं वै कन्दमूल जनैः ।९९।

भावार्थ—आचार्य जी ने अपने निवास के लिए यत्न से सादी कुटिया बनवाई है। उसके समीप क्रान्तदर्शी शिष्य कल्याण और मोक्ष के लिए तप का अभ्यास करते हैं। वे पवित्र पृथ्वी खण्ड पर बैठ कर नित्य ध्यान और सन्ध्या विधि सम्पन्न करते हैं। आश्रमवासी जनों को समय पर आसानी से फल और कन्दमूल का भोजन प्राप्त हो जाता है ।९९। शार्दूलविक्रीडित छन्द।

रे रे बालक ! योगयुक्तमनसा शब्दं गुरोः श्रूयताम्,
विद्वांसो बहवो वसन्ति भुवने सर्वे न ते तापसाः ।
केचिन्नात्र हि बोधयन्ति कथनं केषां विचारं वृथा,
प्राज्ञेभ्यस्सततं करोतु नमनं मूर्खाय दूरान्नमः ।१००।

भावार्थ—अरे नन्हे ब्रह्मचारी! एकाग्र मन से गुरुवचन को सुन। दुनिया में विद्वान् तो बहुत हैं परन्तु वे सब तपस्वी नहीं। कुछ तो ऐसे बोलते हैं कि अपने कथन का स्पष्ट बोध नहीं करा पाते। कुछ ऐसे हैं, जिनमें विचार करने की शक्ति नहीं। वे भी व्यर्थ हैं। प्रतिभावान् विद्वानों को सदा नमन करो और मूर्खों को दूर से नमस्कार कर दो ।१००।

क्रीडन्तां वटवो बलेन सहितं यैस्ताडितं कन्दुकम्,
स्वच्छन्दं भ्रमणं वनेषु पशुभिर्यूथेन साकं सदा।
गोवृन्दश्चरणं करोतु नितरां वत्सं च वै लालयेत्,
सानन्दं सुलभं भवेद् गुरुकुलं शिष्यैस्सिहंशावकैः ।१०१।

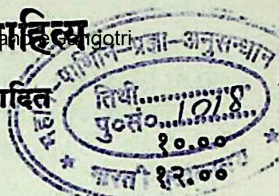
भावार्थ—विद्यार्थी बलपूर्वक गेंद को प्रताड़ित करते हुए खेलें। वनों में झुण्डों के साथ पशु हमेशा स्वतंत्र होकर घूमें। गौवें भी खूब चरें और अपने बछड़ों को चाट-चाट कर प्यार दें। यह गुरुकुल शिष्यों तथा सिंह के बच्चों सहित आनन्द को प्राप्त करे।१०१।

आचार्य्यास्सततं भवन्तु भुवने नित्यं च सत्ये रताः,
विद्वांसो नितरां रमन्तु निकटं सर्वेऽपि मेधाविनः।
संस्कारैरुपशोभिताश्च परमं पण्डान्विताः पण्डिताः,
नैष्ठिकाः श्रमिकाश्च सन्तु बहवः देशेषु लोकेषु वै।१०२।

भावार्थ—संसार में हमेशा सत्य में रमण करने वाले आचार्य्य हों। उनके निकट सदैव मेधावी विद्वान् लोग आनन्द करें। संस्कारों से अतिशोभित बुद्धि सम्पन्न पण्डित और श्रम करने वाले बहुत-से नैष्ठिक ब्रह्मचारी देशों में और लोगों में रहें।१०२।



धार्मिक तथा श्रेष्ठ वैदिक साहित्य



श्री पं० हरिदेव आर्य द्वारा सम्पादित

मधुर भजन पुष्पांजली (प्रथम भाग) १०.००
मधुर पुष्पांजली (द्वितीय भाग) १२.००
प्रभात गीत (जलसे-जलूसों में गाये जाने वाले भजनों का संग्रह) २.५०
वैदिक नित्यकर्म विधि (सप्तम संस्करण) २२.००

श्री पं० व्रजपाल शर्मा 'कर्मठ'

कर्मठ गीतांजली (प्रथम भाग) २.००
कमठ गीतांजली (द्वितीय भाग) ३.००
वैदिक सरल गीत श्री सत्यपाल "सरल" ३.००
रोगों की सरल चिकित्सा : श्री स्वामी स्वरूपानन्द ६.००
अमर दीप : श्री प्रणव शास्त्री ४.००
तरंगित हृदय : श्री राजेन्द्र 'जिज्ञासु' ६.००
सुधारक-सन्देश : श्री रघुवर सिंह 'सुधारक' ३.५०
महिला गीतांजली : बहिन सुशीला ८.००
उत्तर रामचरित (हिन्दी काव्य) श्री भंवरलाल शर्मा ६.००
राजस्थान के आर्यमहापुरुष : डा० भवानीलाल 'भारतीय' १५.००
तड़प वाले : तड़पाती जिनकी कहानी (प्रथम) : प्रो० राजेन्द्र जिज्ञासु १८.००
तड़प वाले : तड़पाती जिनकी कहानी (द्वितीय) : " " " ३०.००
यजुर्वेद शतकम् : श्री सच्चिन्दानन्द शास्त्री १४.००
उपनिषद् प्रकाश : स्वामी दर्शनानन्द ६०.००
परमेश्वर पुत्र ईसा : श्री जगदीश्वर वानप्रस्थ १४.००
शिक्षाप्रद, ऐतिहासिक कहानियां : श्री सच्चिदानन्द शास्त्री १५.००
मधुर शिष्टाचार ओर सदाचार : श्री राजपाल सिंह शास्त्री १४.००
आर्य युवक संदेश : श्री मांगेराम एम. ए. ४.००
सुखी गृहस्थ : प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु' ५.००
नारी दर्पण : श्री सच्चिदानन्द शास्त्री १५.००
यज्ञोपवीत मीमांसा : श्री सच्चिदानन्द शास्त्री ३.००

अन्य सभी प्रकार के वैदिक साहित्य के लिए प्रकाशक एवं विक्रेता से सम्पर्क कीजिए।

वैदिक-प्रकाशन
आर्यसमाज मन्दिर, २८०४-बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६
फोन : २६८२३१ : ५१३२०६

महापुरुषों के जीवन-चरित्र पढ़ें

स्वामी विरजानन्द (स्वामी वेदानन्द सरस्वती) १५)

सर्वविध क्रान्ति के प्रवर्त्तक स्वामी विरजानन्द जी का जीवन-चरित एक बार अवश्य पढ़ें। महर्षि दयानन्द सरस्वती के गुरु। टाइटल विशेष आकर्षक।

महर्षि दयानन्द (विद्याभास्कर रामेश्वर शास्त्री) ३)

बालोपयोगी संस्करण। सम्पूर्ण जीवनी। मोटा टाइप।

दर्शनानन्द सरस्वती (डा० भवानी लाल 'भारतीय' २-५०

अनेक पुस्तकों के लेखक, तार्किक शिरोमणि, अनेक गुरुकुलों के संस्थापक, अनेक शास्त्रार्थ करने वाले की जीवनी अवश्य पढ़ें

अमर कहानी वीर हकीकत राय (प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु') ५)

बलिदानी आर्य युवक की सच्ची कहानी। मोटा टाइप।

स्वामी श्रद्धानन्द (पं० हरिदेव आर्य, एम० ए०) २०)

संघर्षमूर्ति स्वामी श्रद्धानन्द की जीवनी तथा उनके द्वारा लिखित ग्रन्थों में से संग्रहीत सूक्तियां (कोटेशन्स)

श्री लालबहादुर शास्त्री (श्री परमेश शर्मा, एम० ए०) १२)

भारत के दिवंगत प्रधानमन्त्री श्री शास्त्री जी की प्रेरणाप्रद जीवनी और संस्मरण पढ़िये।

लौह पुरुष चौ० चरण सिंह (श्री परमेश शर्मा, एम० ए०) १४)

मनसा-वाचा-कर्मणा स्वदेशी और सात्विक जीवन जीने वाले चौधरी साहब की कथनी और करनी में अन्तर नहीं था।

व्यक्ति से व्यक्तित्व (प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु') २०)

स्व० पं० गंगाप्रसाद जी उपाध्याय की विस्तृत जीवनी।

आत्म-कथा पं० रामप्रसाद 'बिस्मिल' (श्री राजपाल सिंह शास्त्री) १०)

क्रान्तिकारी श्री बिस्मिल जी की आत्म कथा, जो फांसी से तीन दिन पहले कारावास में बैठकर लिखी। ओजस्वी भाषा।

क्रान्ति के अग्रदूत (श्री सच्चिदानन्द शास्त्री) १२)

अनेक दिवंगत क्रान्तिकारी आर्य वीरों की जीवनी पढ़िये।

लाला लाजपत राय (प्रो० राजेन्द्र 'जिज्ञासु') ३०)

आर्यवीर, श्री लाला जी की जीवनी ओजस्वी भाषा में पढ़ें। आकर्षक टाईटिल, बढ़िया कागज।

इनके अतिरिक्त अनेक जीवनोपयोगी साहित्य के लिए बृहत् सूची-पत्र मंगायें।

मधुर-प्रकाशन

२८०४-गली आर्यसमाज, बाजार सीताराम, दिल्ली-११०००६


महर्षि-पाणिनि-प्रज्ञा-अनुसन्धा
तिथी
पु०सं० 1078
भारती पुस्तकालय



श्री महेन्द्र कुमार शास्त्री

आप द्वारा

लिखित पुस्तकें

१. वैदिक विवाह संस्कार विधि

२. पितृ शतकम्

३. गुरुकुल महत्त्वशतकम्

– व्यवस्थापक